भारत के संदर्भ में शिक्षा के उद्देश्य

(Aims of Education with Reference to India)

शिक्षा के उद्देश्य

(Objective of Education)

1) व्यक्तिक उद्देश्य
2) सामाजिक उद्देश्य
3) राष्ट्रीय उद्देश्य

'जॉन डीवी' के अनुसार,

जॉन डीवी ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताएं हैं।

i. शिक्षा के पूर्व निश्चित उद्देश्य का निषेध
ii. शिक्षा के व्यक्तिगत उद्देश्य
iii. शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य

'पेस्टोलॉजी' के अनुसार,

पेस्टोलॉजी ने शिक्षा के निम्न उद्देश्य को प्राथमिकता दी है।

i. बालक का समविकास अर्थात शारीरिक मानसिक नैतिक भावात्मक एवं कलात्मक विकास।
ii. बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास।

'हरबर्ट' के अनुसार,

हरबर्ट ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताएं हैं।

i. शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य नैतिकता का विकास
ii. बहुमुखी रुचि उत्पन्न करना
iii. बहुमुखी विकास

शिक्षा के उद्देश्य निर्धारण की आवश्यकता तथा महत्व

(Need for Determining Aims of Education)

- शिक्षा का समस्त कार्य उसके उद्देश्य को ही केंद्र बिंदु मानकर होता है।
- शिक्षा का कार्य प्रारंभ करते ही शिक्षक को यह जानने की आवश्यकता होती है कि उसे कहां पहुंचना है किन लक्ष्यों की प्राप्ति करनी है तथा शिक्षा के क्या परिणाम निकालने हैं।
- शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा प्रारंभ करने के पूर्व ही निश्चित तथा निर्धारित कर लेना अति आवश्यक होता है वहीं शिक्षार्थी उस यात्री के समान है जो यह भी नहीं जानता कि मुझे कहां जाना है वह देश के ज्ञान के बिना शिक्षक उस नाविक के समान होता है जिसे अपने लक्ष्य का ज्ञान नहीं।

शिक्षा के व्यक्तिक उद्देश्य

(Individuals Aims of Education)

i. **शारीरिक विकास का उद्देश्य-** शारीरिक विकास का अर्थ है इस शरीर स्वस्थ एवं निरोगी हो इसके अंतर्गत स्वस्थ शरीर की प्राप्ति ही शारीरिक विकास का उद्देश्य होती है।

ii. **मानसिक विकास का उद्देश्य**- मानसिक विकास के उद्देश्य का अर्थ ज्ञान अर्जित करने से है। बालकों को विभिन्न विषयों का ज्ञान दिया जाता है, जिससे उनका मानसिक विकास हो सके।

iii. **जीविकोपार्जन का उद्देश्य**- इस उद्देश्य का अर्थ है कि व्यक्ति को इस योग्य बनाना जिससे कि वह अपने जीवन का निर्वाह कर सकें ।अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए समर्थ हो। किसी दूसरे पर निर्भर ना हो।

iv. **बौद्धिक विकास का उद्देश्य**- इस उद्देश्य के अंतर्गत शिक्षा संपूर्ण मानसिक विकास के लिए ही दी जानी चाहिए ।उनका विकास एवं विवेक का विकास ही शिक्षा है जो इस का अंतिम उद्देश्य है।

v. **<u>चरित्र का विकास</u>**- मनुष्य तभी सुखी हो सकता है । जब वह कुछ नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए अपने चरित्र का विकास करें।

vi. **<u>आत्माभिव्यक्ति का उद्देश्य</u>**- आत्मा भी व्यक्ति का उद्देश्य मूल रूप से व्यक्ति की ही है व्यक्ति जैसा है यदि उसे स्वयं को वैसा ही प्रकाशित करने की स्वतंत्रता हो तभी मैं अपना पूर्ण विकास कर सकता है।

vii. **<u>सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य</u>**- सांस्कृतिक विकास से अभिप्राय सांस्कृतिक उत्थान ही है। जिसमें संस्कृति को फैलाना अर्थात मनुष्य को सभ्य सुसंस्कृत बनाना है। जिसमें उच्च विचारों तथा मानवीय गुणों का विकास हो सके।

viii. **<u>आत्मानुभूति का उद्देश्य</u>**- इसके अंतर्गत मनुष्य में इतनी क्षमता विकसित कर दी जाए कि वह अपने अंदर छुपी हुई सभी साथियों को पहचान सके अर्थात स्वयं को समझ सके।

भारतीय संदर्भ में शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य

i. नेतृत्व विकास का उद्देश्य
ii. सार्वभौमिक शिक्षा
iii. अंतर्राष्ट्रीय भावना का विकास
iv. नागरिकता का विकास
v. अवकाश काल का सदुपयोग
vi. समाजवादी समाज की स्थापना
vii. सामाजिक अंधविश्वासों एवं धार्मिक समस्याओं का अंत
viii. जन शिक्षा का प्रचार प्रसार
ix. सामाजिक क्रियाओं पर बल

भारतीय संदर्भ में शिक्षा के राष्ट्रीय उद्देश्य

i. अच्छे नेतृत्व करता के गुणों का विकास
ii. नागरिक प्रशिक्षण
iii. राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास
iv. मूल्यों और आदर्शों की रक्षा
v. राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा का महत्व
vi. अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान में वृद्धि
vii. गरीबी और बेरोजगारी की समस्या को सुलझाना
viii. भावात्मक एकता का विकास
ix. राष्ट्रीय संपत्ति का संरक्षण